



सत्यमेव जयते

महाराष्ट्र शासन  
विधि व न्याय विभाग

सन १८६९ चा मुंबई अधिनियम क्रमांक १४

**मुंबई दिवाणी न्यायालय अधिनियम, १८६९**

( दिनांक ३१ ऑगस्ट २००६ पर्यंत सुधारित )

**Act No. XIV of 1869**

**The Bombay Civil Courts Act, 1869**

*( As modified upto 31st August 2006 )*

व्यवस्थापक, शासकीय मुद्रणालय, औरंगाबाद यांनी मुद्रित केले व संचालक, शासकीय मुद्रण व लेखनसामग्री, महाराष्ट्र राज्य, मुंबई ४०० ००४ यांनी प्रकाशित केले.

२००६

[ किंमत : रुपये ६.०० ]

## अनुक्रमणिका

उद्देशिका.  
कलमें.

पृष्ठे

### प्रकरण - एक प्रारंभिक

|    |                          |   |
|----|--------------------------|---|
| १. | संक्षिप्त नाव व व्याप्ती | ५ |
| २. | [ निरसित करण्यात आले ]   | ५ |

### प्रकरण - दोन जिल्हे आणि सदर स्टेशन

|    |                                              |   |
|----|----------------------------------------------|---|
| ३. | जिल्ह्यात फेरफार करणे आणि नवीन जिल्हे बनविणे | ५ |
| ४. | सदर स्टेशनाची जागा                           | ५ |

### प्रकरण - तीन जिल्हा न्यायालये

|     |                                                    |   |
|-----|----------------------------------------------------|---|
| ५.  | जिल्हा न्यायाधीश                                   | ६ |
| ६.  | जिल्हा न्यायालयाची जागा                            | ६ |
| ७.  | जिल्हा न्यायालयाचे प्रारंभिक क्षेत्राधिकार         | ६ |
| ८.  | जिल्हा न्यायालयाचे अपील क्षेत्राधिकार              | ६ |
| ९.  | न्यायालयांवर नियंत्रण ठेवणे आणि त्याची तपासणी करणे | ६ |
| १०. | लेख आणि आदेश                                       | ६ |
|     | प्रतिवृत्ते आणि पत्रके                             | ६ |
| ११. | जिल्हा न्यायाधिकाचा शिक्का                         | ६ |

### प्रकरण - चार

#### जिल्हा सह न्यायाधीश

|      |                                                                                                                                          |   |
|------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---|
| १२.  | जिल्हा सह न्यायाधीश नेमण्याचा अधिकार                                                                                                     | ७ |
| १२अ. | एका जिल्ह्यातील जिल्हा न्यायाधीश किंवा अपर जिल्हा न्यायाधीश याची दुसऱ्या जिल्ह्यांतील जिल्हा सह न्यायाधीश म्हणून नेमणूक करण्याचा अधिकार. | ७ |
| १३.  | जिल्हासह न्यायाधिकास लागू असणारे अधिनियम : जिल्हा सह न्यायाधीशाचा शिक्का.                                                                | ७ |

| कलमे   |                                                                                                                                                            | पृष्ठे       |
|--------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------|
|        | <b>प्रकरण-पाच</b>                                                                                                                                          |              |
|        | <b>अपर जिल्हा न्यायाधीश</b>                                                                                                                                |              |
| १४.    | अपर जिल्हा न्यायाधीश नेमण्याचा अधिकार                                                                                                                      | ८            |
| १५.    | अपर जिल्हा न्यायाधिकाऱ्याच्या न्यायालयाची जागा                                                                                                             | ८            |
| १६.    | अपर जिल्हा न्यायाधिकाऱ्याचे प्रारंभिक क्षेत्राधिकार                                                                                                        | ८            |
| १७.    | अपर जिल्हा न्यायाधिकाऱ्याचे अपील क्षेत्राधिकार                                                                                                             | ८            |
| १८.    | [ वगळण्यात आले ]                                                                                                                                           |              |
| १९.    | अपर जिल्हा न्यायाधिकाऱ्याकडे जिल्हा न्यायाधिकाऱ्याचे अधिकार सोपवून देण्याचा अधिकार.                                                                        | ९            |
| २०.    | अपर जिल्हा न्यायाधिकाऱ्याने जिल्हा न्यायाधिकाऱ्याचा शिक्का वापरणे                                                                                          | ९            |
|        | <b>प्रकरण-सहा</b>                                                                                                                                          |              |
|        | <b>दिवाणी न्यायाधीश</b>                                                                                                                                    |              |
| २१.    | दुय्यम दिवाणी न्यायालयांची संख्या                                                                                                                          | ९            |
| २२.    | दिवाणी न्यायाधिकाऱ्यांची नेमणूक                                                                                                                            | ९            |
| २२अ.   | दिवाणी न्यायाधिकाऱ्यांच्या क्षेत्राधिकाराच्या स्थानिक हद्दी ठरविण्याचा अधिकार                                                                              | १०           |
| २३.    | दुय्यम न्यायालयांची जागा, संयुक्त दिवाणी न्यायाधिकाऱ्यांची नियुक्ती<br>संयुक्त दिवाणी न्यायाधिकाऱ्यांस लागू असणाऱ्या तरतुदी                                | १०, ११       |
| २४.    | दिवाणी न्यायाधिकाऱ्यांचे वर्ग.<br>(वरिष्ठ श्रेणीच्या) दिवाणी न्यायाधिकाऱ्यांचे क्षेत्राधिकार<br>(कनिष्ठ श्रेणीच्या) दिवाणी न्यायाधिकाऱ्यांचे क्षेत्राधिकार | ११, १२<br>१२ |
| २५.    | (वरिष्ठ श्रेणीच्या) दिवाणी न्यायाधिकाऱ्यांचे विशेष क्षेत्राधिकार                                                                                           | १२           |
| २६.    | त्यांच्या निर्णयावर अपील करणे                                                                                                                              | १२           |
| २७.    | (वरिष्ठ श्रेणीच्या) दिवाणी न्यायाधिकाऱ्यांचे किंवा लघुवाद न्यायालयाच्या<br>न्यायाधिकाऱ्यांचे अपील क्षेत्राधिकार.                                           | १२           |
| २८.    | दिवाणी न्यायाधिकाऱ्यांकडे लघुवाद न्यायालयाचे अधिकार सोपविण्याचा अधिकार                                                                                     | १३           |
| २८-अ.  | विवक्षित अधिनियमांअन्वये दिवाणी न्यायाधिकाऱ्यांस क्षेत्राधिकार देण्याचा अधिकार.                                                                            | १३           |
| २९.    | दिवाणी न्यायाधिकाऱ्याचा शिक्का                                                                                                                             | १४           |
| ३०-३१. | [ निरसित करण्यात आले ]                                                                                                                                     | १४           |
| ३२.    | सरकारसंबंधी दावे काढून टाकणे किंवा तात्पुरत दूर करणे                                                                                                       | १४           |
| ३३.    | [ निरसित करण्यात आले ]                                                                                                                                     | १५           |
| ३४.    | [ निरसित करण्यात आले ]                                                                                                                                     | १५           |

कलमे

पृष्ठे

प्रकरण-सात  
तात्पुरत्या रिक्त जागा.

|     |                                               |    |
|-----|-----------------------------------------------|----|
| ३५. | जिल्हा न्यायाधिकाचे तात्पुरते रिक्त झालेले पद | १५ |
| ३६. | जिल्हा न्यायाधिकाचे अधिकार सोपविणे            | १६ |
| ३७. | दुय्यम न्यायाधिकाचे तात्पुरते रिक्त झालेले पद | १६ |

प्रकरण-आठ  
प्रशासी अधिकारी

|      |                                     |    |
|------|-------------------------------------|----|
| ३८.  | [ निरसित करण्यात आले ]              | १६ |
| ३९.  | प्रशासी अधिकाऱ्यांची कर्तव्ये       | १६ |
| ४०.  | न्यायालयाचे कारकून नेमण्याचे अधिकार | १६ |
| ४०-अ | [ निरसित करण्यात आले ]              | १६ |

प्रकरण-नऊ  
संकीर्ण

|      |                                     |    |
|------|-------------------------------------|----|
| ४१.  | कामकाज ठेवण्यासंबंधी नियम           | १७ |
| ४१-अ | लायसन दिलेले विनंती-अर्ज लिहून देणे | १७ |
| ४२.  | आदेशिकेची फी                        | १७ |
| ४३.  | न्यायालयाची बैठक                    | १७ |
|      | सुट्या                              | १७ |
|      | अनुसुची [ निरसित करण्यात आले ]      | १७ |

[मुंबई दिवाणी न्यायालय अधिनियम, १८६९]<sup>†</sup>

[१९ मार्च, १८६९]

हा अधिनियम पुढील अधिनियमांअन्वये अंशतः निरसित करण्यात आला :-

- सन १८७० चा अधिनियम १४.
- सन १८७६ चा अधिनियम १२.
- सन १८८९ चा अधिनियम ७.
- सन १८९० चा अधिनियम ८.
- सन १८९१ चा अधिनियम १२.
- सन १९१० चा मुंबई अधिनियम १.

या अधिनियमात पुढील अधिनियमांअन्वये सुधारणा करण्यात आल्या :-

- सन १८७६ चा अधिनियम १०.
- सन १८८० चा अधिनियम ९.
- सन १८८० चा अधिनियम १५.
- सन १९३० चा अधिनियम २८.
- सन १८९५ चा मुंबई अधिनियम ३.
- सन १९०० चा मुंबई अधिनियम १.
- सन १९१२ चा मुंबई अधिनियम ५.
- सन १९१४ चा मुंबई अधिनियम ५.
- सन १९२६ चा मुंबई अधिनियम ६.
- सन १९२७ मुंबई अधिनियम ९.
- सन १९३० चा मुंबई अधिनियम ७.
- भारतीय विधि अनुकूलन परिषद आदेशाद्वारे त्यांत अनुकूलन व रूपभेद करण्यात आले.

या अधिनियमात पुढील अधिनियमांअन्वये सुधारणा करण्यात आल्या :-

- सन १९४२ चा मुंबई अधिनियम ११.\*
- सन १९४२ चा मुंबई अधिनियम २०.\*
- सन १९४५ चा मुंबई अधिनियम १०.\*

१. उद्देश व कारण यांचे निवेदन, यासाठी मारताचे राजपत्र १८६९ याचे पृष्ठ क्र. ५०० पहामे; आणि परिषदेतील कार्यवाहीसाठी वरील राजपत्र महावे पुरक पृष्ठ ५९, १८७, १८५, ३३६, ४२१ व ४६४.

† हा अधिनियम लागू करण्यात आला आणि सन १९५८ चा मुंबई ९४ (सन १९५८ चा मुंबई ९४ याचे कलम २ प्रहा) या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या लघुतपूर्व मुंबई राज्याच्या ज्या भागास लागू नव्हते त्या भागास याद्वारे लागू करण्यात येत आहे आणि अशा रीतीने लागू केल्यामुळे तो त्या भागात अमलात राहील.

\* सन १९४७ चा मुंबई क्रमांक ४८ याद्वारे हा अधिनियम पुन्हा लागू करण्यात आला.

भारतीय स्वातंत्र्य (केंद्रीय अधिनियम अध्यादेश आणि अनुसूचक) आदेश, १९४८ अनुसूचक आणि रूपभेद करण्यांत आले :-

या अधिनियमांत पुढील अधिनियमान्वये सुधारणा करण्यांत आल्या :-

सन १९४९ चा मुंबई अधिनियम २२.

सन १९४९ चा मुंबई अधिनियम ५४†.

† सन १९४९ चा मुंबई अधिनियम क्रमांक ५४ याचे कलम ६, पुढील प्रमाणे वाढावे :-

व्यावृत्ती "६ या अधिनियमाची कलमे २ ते ५ (दोन्ही धरून) यांच्या तरतुदींद्वारे उक्त अधिनियमात करण्यात आलेली सुधारणा पुढील बाबतीत परिणामक होणार नाही व लागू होणार नाही :-

(अ) हा अधिनियम अमलात येण्याच्या दिनांकास कोणत्याही न्यायालयात प्रलंबित असलेल्या ज्या दिवाणी स्वरूपाच्या दाव्यातील किंवा कार्यवाहीतील विषयाची रक्कम किंवा मूल्य हे पाच हजार रुपयांपेक्षा अधिक परंतु दहा हजार रुपयांपेक्षा कमी असेल असा दिवाणी स्वरूपाचा कोणताही दावा किंवा कार्यवाही असा कोणताही दावा किंवा कार्यवाही ही जणू काही हा अधिनियम संमत झाला नव्हता अशा प्रकारे, चालू ठेवण्यात येईल व निकालात काढण्यात येईल ; आणि

(ब) (एक) ज्या दाव्यातील किंवा कार्यवाहीतील विषयाची रक्कम किंवा मूल्य हे खंड (अ) मध्ये विनिर्दिष्ट केल्याप्रमाणे असेल अशा कोणत्याही दाव्यामध्ये किंवा कार्यवाहीमध्ये काढलेल्या मूळ वा अपील हुकूमनाम्यावर वा आदेशावर दाखल करण्यात आलेली आणि हा अधिनियम अमलात येण्याच्या दिनांकास कोणत्याही न्यायालयात प्रलंबित असलेले कोणतेही अपील ;

(दोन) या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या दिनांकापूर्वी काढलेल्या हुकूमनाम्यावर किंवा आदेशावर दाखल करण्यात आलेले कोणतेही अपील.

असे कोणतेही अपील, जणू काही हा अधिनियम संमत झाला नव्हता अशा प्रकारे चालू ठेवण्यात येईल किंवा दाखल करण्यात येईल वा निकालात काढण्यात येईल."

\* त्यात पुढील आदेशान्वये अनुकूलने व रूपभेद करण्यात आले :-

विधी अनुकूलन आदेश, १९५०.

सन १९५० चा मुंबई अधिनियम ३६९.

विधी अनुकूलन (राज्य व समवर्ती विषय) आदेश, १९५६.

सन १९५८ चा मुंबई अधिनियम ९४९.

\$ सन १९५८ चा मुंबई अधिनियम क्रमांक ९४ याचे कलम ८ पुढील प्रमाणे वाचावे :-

"८. या अधिनियमाच्या प्रारंभापूर्वी राज्याच्या ज्या भागास मुख्य अधिनियम लागू नव्हता त्या भागास तो लागू केल्यावर— निरसन व व्यावृत्ती.

(१) मध्यप्रांत व बन्हाड न्यायालय अधिनियम, १९१७.

(२) हैदराबाद दिवाणी न्यायालय अधिनियम, १९५४.

(३) सौराष्ट्र जिल्हा व दिवाणी न्यायालय अध्यादेश, १९४८, आणि

(४) कच्छ (न्यायालय) आदेश, १९४८

हे रद्द होतील :

परंतु हे अधिनियम अशा रीतीने रद्द झाल्यामुळे अशा रीतीने रद्द केलेल्या अधिनियमांच्या, अध्यादेशांच्या किंवा आदेशांच्या पूर्वीच्या अंमलास बाध येणार नाही आणि त्यांच्या उपबंधांनुसार किंवा त्यान्वये केलेले कोणतेही कृत्य किंवा उपाययोजना (यांत बनविण्यात आलेले जिल्हे, ठरविलेल्या मर्यादा, स्थापन केलेली किंवा रचना केलेली न्यायालये, केलेल्या नेमणुका, केलेले नियम, दिलेले आदेश, नेमून दिलेली कामे, दिलेले अधिकार, विहित केलेले शिक्के किंवा नमुने, ठरविलेला किंवा निहित केलेला क्षेत्राधिकार, काढलेल्या अधिसूचना किंवा नोटिसा व चालविलेले कामकाज या गोष्टींचा समावेश होतो), ही मुख्य अधिनियमाच्या उपबंधांशी विसंगत नसेल तेथवर, मुख्य अधिनियमाच्या तत्सम उपबंधान्वये केलेले कृत्य किंवा केलेली उपाययोजना आहे असे समजले पाहिजे. आणि मुख्य अधिनियमान्वये केलेल्या कोणत्याही कृत्यावरून किंवा उपाययोजनेवरून रद्द करण्यात आली नसेल तर व रद्द करण्यांत येईपर्यंत अंमलात असण्याचे चालू राहील.

तसेच कोणत्याही न्यायालयासमोर किंवा प्राधिकाऱ्यासमोर अनिर्णित असलेले सर्व कामकाज मुख्य अधिनियमान्वये तत्सम न्यायालयाकडे किंवा प्राधिकाऱ्याकडे, आणि असे तत्सम न्यायालय किंवा प्राधिकारी नसेल तर, किंवा असे तत्सम न्यायालय कोणते किंवा तत्सम प्राधिकारी कोण याबाबत शंका उपस्थित झाली असेल तर उच्च न्यायालय नामोद्दिष्ट करील त्या न्यायालयाकडे किंवा प्राधिकाऱ्याकडे हस्तांतरित करण्यात आले आहे असे समजले पाहिजे, आणि ते अशा न्यायालयासमोर किंवा प्राधिकाऱ्यासमोर चालू ठेवण्यात आले पाहिजे व त्याजकडून ते निकालात काढण्यात आले पाहिजे."

सन १९७७ चा महाराष्ट्र अधिनियम ४६§ (१-१-१९७८)‡.

सन १९८३ चा महाराष्ट्र अधिनियम १० (१-१-१९८४)‡.

सन १९८४ चा महाराष्ट्र अधिनियम २७@ (२८-१-१९८४)‡.

सन १९९९ चा महाराष्ट्र अधिनियम ३ (१३-१-१९९९)‡.

सन २००१ चा महाराष्ट्र अधिनियम ३५ @ @‡.

‡ ही खूण अधिनियमाच्या प्रारंभीचा दिनांक दर्शविते.

§ सन १९७७ चा महाराष्ट्र अधिनियम क्रमांक ४६ याचे कलम १९ पुढील प्रमाणे वाचावे.

व्यावृत्ती.

"१९. पूर्वोक्त अधिनियमांपैकी कोणत्याही अधिनियमात या अधिनियमाद्वारे केलेल्या सुधारणांचा या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या तारखेस कोणत्याही न्यायालयात दाखल केलेल्या व त्याच्याकडे प्रलंबित असलेल्या दिवाणी स्वरूपाच्या कोणत्याही वादाच्या, अपिलाच्या किंवा इतर कार्यवाहीच्या बाबतीत परिणाम होणार नाही व त्याबाबतीत त्या लागू असणार नाहीत व अशी कार्यवाही जणू काही हा अधिनियम संमत करण्यात आलेला नसल्याप्रमाणे त्या न्यायालयाकडून चालू ठेवण्यात येईल व निकालात काढण्यात येईल; तसेच या अधिनियमाच्या प्रारंभाच्या तारखेपूर्वी कोणत्याही न्यायालयाने काढलेल्या कोणत्याही हुकूमनाम्याच्या किंवा दिलेल्या आदेशाच्या बाबतीतील दिवाणी स्वरूपाचे कोणतेही अपील, पुनरीक्षण अर्ज किंवा इतर कार्यवाही जणू काही हा अधिनियम संमत करण्यात आलेला नसल्याप्रमाणे, अशा प्रारंभापूर्वी अशी कार्यवाही करण्यास सक्षम असणाऱ्या न्यायालयापुढे दाखल करण्यात येईल व तिची सुनावणी करण्यात येईल व ती निकालात काढण्यात येईल."

@ सन १९८४ चा महाराष्ट्र अधिनियम क्रमांक २७ याचे कलम ३ पुढील प्रमाणे वाचावे :-

सन १९८३ चा

महाराष्ट्र

अधिनियम

क्रमांक १० द्वारे

करण्यात

आलेल्या

सुधारणांचा

प्रलंबित काम-

काजावर

होणारा परिणाम

व व्यावृत्ती.

"३. (१) १ जानेवारी १९८४ रोजी (या कलमात यानंतर जिचा निर्देश "उक्त तारीख" असा करण्यात आलेला आहे) अंमलात सन १९८३ आलेला मुंबई दिवाणी न्यायालय (सुधारणा) अधिनियम, १९८२ द्वारे करण्यात आलेल्या सुधारणांचा उक्त तारखेस कोणत्याही १९८३ न्यायालयात सादर करण्यात आलेले व प्रलंबित असलेले दिवाणी स्वरूपाचे कोणतेही दावे, अपिल किंवा इतर कामकाज या या राबध्यात कोणताही परिणाम होणार नाही व अशा सुधारणा, असे दावे, अपिल किंवा कामकाज यास लागू होणार नाहीत आणि जणू महाराष्ट्र उक्त अधिनियम संमत झालेला नाही असे समजून उक्त न्यायालयाकडून असे दावे, अपिल व इतर कामकाज चालू ठेवण्यात व १०. निकालात काढण्यात येईल; आणि उक्त तारखेपूर्वी कोणत्याही न्यायालयाने दिलेला कोणताही हुकूमनामा किंवा आदेश यासंबंधीचे दिवाणी स्वरूपाचे कोणतेही अपील, फेरतपासणी अर्ज किंवा इतर कामकाज हे, जणू उक्त अधिनियम संमत झालेला नाही असे समजून, उक्त तारखेपूर्वी असे कामकाज दाखल करून घेण्यास जे न्यायालय सक्षम असेल त्या न्यायालयात दाखल करण्यात येईल व त्या न्यायालयाकडून त्याची सुनावणी करण्यात येऊन ते निकालात काढण्यात येईल.

(२) उक्त तारखेपूर्वी अपील, फेरतपासणी अर्ज किंवा इतर कामकाज दाखल करून घेण्यास जे न्यायालय सक्षम असेल त्या १९८४ च न्यायालयाखेरीज इतर न्यायालयात, दाखल केलेले अपील, फेरतपासणी अर्ज किंवा इतर कामकाज यामध्ये उक्त तारखेपूर्वी महाराष्ट्र कोणत्याही न्यायालयाने दिलेल्या कोणत्याही हुकूमनाम्याविरुद्धचे किंवा आदेशाविरुद्धचे दिवाणी स्वरूपाचे कोणतेही अपील, २७. फेरतपासणी अर्ज किंवा इतर कामकाज हे, उक्त तारीख व मुंबई दिवाणी न्यायालय (सुधारणा) अधिनियम, १९८४ याच्या १९८३ च प्रारंभाची तारीख (दोन्ही दिवस धरून) यामधील कालावधीत, पूर्वोक्तप्रमाणे असे कामकाज दाखल करून घेण्यास सक्षम असेल महाराष्ट्र अशा न्यायालयाकडे हस्तांतरित करण्यात येईल आणि मुंबई दिवाणी न्यायालय (सुधारणा) अधिनियम, १९८२ हा संमत झालेला १०. नाही असे समजून, उक्त न्यायालयाकडून अशा रीतीने हस्तांतरित केलेल्या कामकाजाची सुनावणी करण्यात येऊन ते निकालात काढण्यात येईल."

@ @ सन २००१ चा महाराष्ट्र अधिनियम क्र. ५ चे कलम ३ पुढीलप्रमाणे वाचावे :-

व्यावृत्ती.

"३. दिवाणी न्यायाधीश (यरिष्ठ श्रेणी) यांच्याबाबतीत, दिवाणी स्वरूपाच्या ज्या दाव्याच्या दादाविषयीची रक्कम किंवा १८६९ मूल्य हे तीन हजार रुपयांपेक्षा अधिनियम परंतु बारा हजार रुपयांपेक्षा कमी असेल आणि दिवाणी न्यायाधीश (कनिष्ठ श्रेणी) चा यांच्याबाबतीत, जेथे दादाविषयाची रक्कम किंवा मूल्य पंधराशे रुपयांपेक्षा अधिक परंतु सहा हजार रुपयांपेक्षा कमी असेल, अशा १४. बाबतीत हा अधिनियम अंमलात येण्याच्या दिनांकाला, कोणत्याही न्यायालयात प्रलंबित असलेल्या दिवाणी स्वरूपाच्या कोणत्याही दाव्यांच्या किंवा कार्यवाहीच्या संबंधात या अधिनियमाच्या कलम २ च्या तरतुदीद्वारे, मुंबई दिवाणी न्यायालय अधिनियम, १८६९ यात करण्यात आलेल्या सुधारणांचा कोणताही परिणाम होणार नाही आणि या सुधारणा त्यांना लागू होणार नाहीत. जणू काही हा अधिनियम संमत झालेला नव्हता असे समजून उक्त न्यायालयाकडून अशा कोणताही दावा किंवा कार्यवाही चालू ठेवण्यात येईल व निकालात काढण्यात येईल."

मुंबई इलाख्यातील जिल्हा दिवाणी न्यायालये आणि कनिष्ठ दिवाणी न्यायालये यासंबंधीचा  
विधि एकत्रित करणारा व त्यात सुधारणा करणारा अधिनियम

ज्याअर्थी, मुंबई इलाख्यातील जिल्हा दिवाणी, न्यायालये आणि इतर कनिष्ठ दिवाणी न्यायालये उद्देशिका यासंबंधीचा विधि एकत्रित करून त्यात सुधारणा करणे इष्ट आहे ; त्याअर्थी, याअन्वये पुढीलप्रमाणे अधिनियम करण्यात येत आहे :-

प्रकरण - एक

प्रारंभिक

१[१. (१) या अधिनियमास, मुंबई दिवाणी न्यायालय अधिनियम, १८६९, असे म्हणावे.

सक्षिप्त नाव व  
व्याप्ती.

(२) तो संबंध <sup>१</sup>[महाराष्ट्र राज्यास] लागू आहे.]

२. सन १८७० चा अधिनियम १४ याअन्वये निरसित करण्यात आले.

निरसित  
करण्यात आले.

प्रकरण - दोन

जिल्हे आणि सदर स्टेशन

३<sup>३</sup>[<sup>४</sup>[राज्य] शासनास] वेळोवेळी, <sup>५</sup>[राजपत्रांत] प्रसिध्द केलेल्या अधिसूचनेद्वारे, <sup>६</sup>[अस्तित्वात असलेल्या जिल्ह्यांच्या हद्दीत] (ज्यांना यापुढे जिल्हे संबोधण्यात येईल.) फेरफार करण्याची आणि या अधिनियमाच्या प्रयोजनांकरिता नवीन जिल्हे बनवण्याचा अधिकार आहे.

जिल्ह्यात फेर-  
फार करणे  
आणि नवीन  
जिल्हे बनविणे.

४. तसेच, <sup>७</sup>[<sup>८</sup>[राज्य शासनाला] वेळोवेळी, <sup>९</sup>[राजपत्रांत] प्रसिध्द केलेल्या अधिसूचनेद्वारे, कोणत्याही जिल्ह्यातील सदर स्टेशनाच्या जागेत फेरफार करण्याचा आणि कोणत्याही नवीन जिल्ह्यांत सदर स्टेशनाची जागा ठरविण्याचा अधिकार आहे.

सदर स्टेशनची  
जागा.

- 
१. सन १९५८ चा मुंबई अधिनियम क्रमांक ९४, कलम ३ अन्वये मूळ कलमाऐवजी हे कलम दाखल करण्यात आले.
  २. महाराष्ट्र विधि अनुकूलन (राज्य व समवर्ती विषय) आदेश, १९६०, अनुसूची अन्वये मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
  ३. भारतीय विधि अनुकूलन परिषद आदेश अन्वये मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
  ४. विधि अनुकूलन आदेश, १९५० अन्वये मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
  ५. भारतीय विधि अनुकूलन परिषद आदेश अन्वये मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
  ६. या संबंधात पुढील कलम ३२क पहा.
  ७. भारतीय विधि अनुकूलन परिषद आदेश अन्वये हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
  ८. विधि अनुकूलन आदेश, १९५० द्वारे हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
  ९. भारतीय विधि अनुकूलन परिषद आदेशाद्वारे हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

## प्रकरण - तीन

### जिल्हा न्यायालये.

जिल्हा न्यायाधीश. ५. प्रत्येक जिल्ह्यांत एक जिल्हा न्यायालय असेल आणि अशा न्यायालयाचा न्यायाधीश म्हणून जिल्हा न्यायाधीश काम करील \* \* \* \* \*

जिल्हा न्यायालयाची जागा. ६. जिल्हा न्यायाधिशाने सामान्यतः आपल्या जिल्ह्यांतील सदर स्टेशनानांत जिल्हा न्यायालय भरवावे, परंतु त्यांस, उच्च न्यायालयाची पूर्वमंजूरी घेऊन, जिल्ह्यांतील अन्य ठिकाणी जिल्हा न्यायालय भरविण्याचा अधिकार आहे.

जिल्हा न्यायालयाचे प्रारंभिक क्षेत्राधिकार. ७. जिल्हा न्यायालय हे [\*दिवाणी प्रक्रिया संहितेच्या] अर्थानुसार अशा जिल्ह्यांतील मुख्य प्रारंभिक दिवाणी न्यायालय असेल.

जिल्हा न्यायालयाचे अपील क्षेत्राधिकार. ८. कलमे १६, १७ आणि २६ यांत जी कोणतीही तरतूद केली असेल ती खेरीज करून, जिल्हा न्यायालय, हे कनिष्ठ न्यायालयाने दिलेल्या ज्या हुकुमनाम्यावर व आदेशावर त्या त्या वेळी अंमलात असणाऱ्या विधिन्याये अपील करता येईल त्या सर्व हुकुमनाम्यावर व आदेशावर अपील करण्याचे न्यायालय असेल.

न्यायालयावर नियंत्रण ठेवणे आणि त्यांची तपासणी करणे. ९. जिल्ह्यांतील दिवाणी न्यायालये आणि त्यांचा सेवक वर्ग यांजवर जिल्हा न्यायाधिकांचे सामान्य नियंत्रण राहील आणि दुय्यम असलेल्या सर्व न्यायालयांच्या कामकाजाची तपासणी करणे किंवा आपल्या सहाय्यकांपैकी एकाकडून तपासणी करविणे आणि ज्या कोणत्याही गोष्टीसंबंधी विधीत तरतूद करण्यांत आली नसेल त्या सर्व गोष्टीसंबंधी त्यास आवश्यक वाटेल त्याप्रमाणे निर्देश देणे हे त्यांचे कर्तव्य असेल.

जिल्हा न्यायाधिशाने अशा ज्या सर्व गोष्टींबाबत उच्च न्यायालयाने निर्णय देणे त्यास आवश्यक वाटत असेल त्या सर्व गोष्टी देखील उच्च न्यायालयाकडे पाठविल्या पाहिजेत.

लेख आणि आदेश. १०. जिल्हा न्यायाधिशाने उच्च न्यायालयाकडून देण्यांत आलेले सर्व लेख, आदेश व आदेशिका यांचे पालन केले पाहिजे आणि त्याने उच्च न्यायालयाकडे प्रकरणाच्या निकडीनुसार आवश्यक असतील अशी पत्रके व प्रतिवृत्ते आपल्या सही निशी व न्यायालयाचा शिक्का लावून पाठविली पाहिजेत.

प्रतिवृत्ते आणि पत्रके. ११. तसेच त्याने, उच्च न्यायालय किंवा [\*राज्य] शासन] मागणी करील अशी प्रतिवृत्ते व पत्रके व कामकाजासंबंधीच्या प्रती पुरविल्या पाहिजेत.

जिल्हा न्यायाधिकाचा शिक्का. ११. जिल्हा न्यायाधिशाने दोन इंच च्यास असलेला चतुष्काकार आणि, \* [अशोक स्तंभ शीर्षाकृति] असलेला शिक्का वापरला पाहिजे. अशा शिक्कावर इंग्रजी भाषेत आणि त्या जिल्ह्याच्या मुख्य भाषेत पुढील मजकूर असेल : -

“ ..... चें जिल्हा न्यायालय.”

१. भारतीय विधि अनुकूलन परिषद आदेश अन्वये हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

२. विधि अनुकूलन आदेश, १९५० द्वारे हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

३. भारतीय विधि अनुकूलन परिषद आदेशाद्वारे हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

४. भारतीय विधि अनुकूलन परिषद आदेशाद्वारे हा मजकूर वगळण्यात आला.

५. सन १९७६ चा अधिनियम क्रमांक १२ अन्वये हा मजकूर निरसित करण्यात आला.

६. सन १९४९ चा मुंबई अधिनियम क्रमांक २२ याच्या कलम ३ द्वारे हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

\* दिवाणी प्रक्रिया संहिता, १९०८ (१९०८ चा ५) पहावे.

## प्रकरण-चार

### <sup>१</sup> [जिल्हा सह न्यायाधीश]

१२. <sup>२</sup> [<sup>३</sup> [राज्य] शासनास ] \* [ \* \* \* ] कोणत्याही जिल्ह्यांत, ज्यास <sup>४</sup> [जिल्हा सह न्यायाधीश] समव्याप्ति अधिकार व समवर्ती क्षेत्राधिकार देण्यात येतील, अशा <sup>५</sup> [जिल्हा सह न्यायाधीशांची] नेमणूक करण्याचा अधिकार आहे. परंतु, त्याने दिवाणी दाव्यांचे दफतर ठेवणे आवश्यक असणार नाही आणि त्याने फक्त जिल्हा न्यायाधीशाकडून मिळालेले किंवा उच्च न्यायालयाच्या आदेशांन्वये त्याकडे देण्यात येतील असे दिवाणी कामकाज चालविले पाहिजे.

\* [ \* \* \* ]

<sup>६</sup> [ १२-अ <sup>७</sup> [<sup>८</sup> [राज्य] शासनास ] कोणत्याही जिल्ह्यांतील जिल्हा न्यायाधीश किंवा <sup>९</sup> [अपर जिल्हा न्यायाधीश] याची दुसऱ्या जिल्ह्यातील <sup>१०</sup> [जिल्हा सह न्यायाधीश] म्हणून नेमणूक करण्याचा अधिकार आहे. अशा <sup>११</sup> [जिल्हा सह न्यायाधिश] कोणत्याही जिल्ह्यातील त्यास योग्य वाटेल अशा जागी किंवा अशा अनेक जागी त्याचे न्यायालय भरवून दिवाणी कामकाज चालविण्याचा अधिकार आहे.

एक जिल्ह्यातील जिल्हा न्यायाधीश किंवा <sup>१२</sup> [अपर जिल्हा न्यायाधीश] याची दुसऱ्या जिल्ह्यांतील <sup>१३</sup> [जिल्हा सह न्यायाधीश] म्हणून नेमणूक करण्याचा अधिकार.

१३. जे अधिनियम आणि विनियम सध्या अंमलांत असतील किंवा यानंतर अंमलांत येतील आणि जे जिल्हा न्यायाधीशास लागू असतील ते अधिनियम व विनियम <sup>१४</sup> [जिल्हा सह न्यायाधिश] लागू असल्याचे समजण्यात आले पाहिजे आणि जिल्हा न्यायाधीश जो शिक्का वापरीत असेल तोच शिक्का <sup>१५</sup> [जिल्हा सह न्यायाधिश] असेल.

[जिल्हा सह न्यायाधिश] लागू असणारे अधिनियम; [जिल्हा सह न्यायाधिश] शिक्का.

१. सन १९८४ चा महाराष्ट्र अधिनियम क्रमांक २७, कलम २ (अ) अन्वये मूळ मजकुराऐवजीयाकरणित फेरुफारांसह हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

२. भारतीय विधी अनुकूलन परिषद आदेश अन्वये मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

३. विधी अनुकूलन आदेश, १९५० अन्वये मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

४. सन १९९० चा मुंबई अधिनियम क्रमांक १ अन्वये हा मजकूर रद्द करण्यात आला.

५. वरील अधिनियमाच्या कलम १२ अन्वये दुरारा खंड रद्द करण्यात आला.

६. सन १९४२ चा मुंबई अधिनियम क्रमांक ११, याच्या कलम २ द्वारे तसेच सन १९४७ चा मुंबई अधिनियम क्रमांक ४८ याच्या कलम ३ द्वारे कलम १२ रद्द करण्यात आला.

७. सन १९८४ चा महाराष्ट्र अधिनियम क्रमांक २७, कलम २ (ब) अन्वये मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

### प्रकरण-पाच

<sup>१</sup> [अपर जिल्हा न्यायाधीश.]

१ [अपर जिल्हा न्यायाधीश] १४. २ [३ [राज्य] शासनास] जिल्हा न्यायाधिशकरिता ४ [ \* \* \* ] एक किंवा अधिक ५ [अपर जिल्हा न्यायाधीश] जिल्हा न्यायाधिश] नेमण्याचा ६ [ \* \* \* ] अधिकार आहे.

नेमण्याचा अधिकार १५. जिल्हा न्यायाधिकाचे न्यायालय ज्या ठिकाणी भरविण्यात येते त्याच ठिकाणी सामान्यतः १[अपर जिल्हा न्यायाधीशाने] आपले न्यायालय भरविले पाहिजे. परंतु, जिल्हा न्यायाधीशाने उच्च न्यायालयाची १[अपर जिल्हा न्यायाधीशाने] पूर्व मंजूरी घेऊन, तसा निदेश दिल्यास सहाय्यक न्यायाधीशास आपले न्यायालय जिल्ह्यांत इतर ठिकाणी भरविता येईल.

न्याया-  
लयाची जागा. १६. जिल्हा न्यायाधीशास, <sup>१</sup>[दिवाणी स्वरूपाचे कोणतेही प्रारंभिक दावे व कार्यवाह्या] <sup>२</sup>[विशेष अधिनियमान्वयेचे अर्ज किंवा उल्लेख] आणि <sup>३</sup>[ \* \* \* ] किरकोळ अर्ज हे त्यास कनिष्ठ <sup>४</sup>[अपर असलेल्या कोणत्याही] <sup>५</sup>[अपर जिल्हा न्यायाधीशांकडे] निर्णयासाठी पाठविण्याचा अधिकार आहे.

जिल्हा न्यायाधिकाचे पराधिक । १ [अपर जिल्हा न्यायाधिकांस] अशा दाव्याचा न्यायचौकशी करण्याचा आणि असे अर्ज <sup>१०</sup> [किंवा बाबी] निकालांत काढण्याचा क्षेत्राधिकार आहे.

१ [अपर जिल्हा न्यायाधिशाने केलेल्या हुकुमनाम्यावर किंवा दिलेल्या आदेशावर अपील करता येत असेल अशा प्रकरणांत दाव्याच्या वाद विषयाची रक्कम किंवा किंमत <sup>११</sup> [ दोन लाख रुपयांपेक्षा अधिक] असल्यास उच्च न्यायालयाकडे आणि दहा हजार रुपयांवर ] नसेल तर जिल्हा न्यायाधिशकडे, अपील करता येईल.

77 [ \* \* \* ]

१३ [१७. १ [अपर जिल्हा न्यायधिशस] अर्धीन न्यायालयांच्या हुकुमनाम्यांवर व आदेशांवर जी अपिले जिल्हा न्यायाधीशाकडे, अपील करता येतील व [जिल्हा] न्यायाधीश त्याजकडे सोपविल अशा अपीलांचा इन्साफ करण्याचा क्षेत्राधिकार असेल.

अपील क्षेत्राधिकार. <sup>५</sup> [ अपर जिल्हा न्यायाधिशाने ] या कलमान्वये केलेले हुक्मनामे व दिलेले आदेश यांचा जिल्हा न्यायाधिशाने केलेले हुक्मनामे व दिलेले आदेश यांसारखाच अंमल असेल आणि कार्यरीती व अपिल यांबंधी जे नियम आहेत त्याच नियमांस ते अधीन असतील. ]

१८. १ [अपर न्यायाधीशांचे] [अपील क्षेत्राधिकार चालू राहणे] हे कलम सन १९५८ चा मुंबई अधिनियम क्रमांक ९४ अन्वये वगळण्यात आले.

१. सन १९८४ चा महाराष्ट्र अधिनियम क्रमांक २७ कलम २ (अ) अन्वये मूळ मजकूराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
२. भारतीय विधि अनुकूलन परिषद आदेश अन्वये मूळ मजकूराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
३. विधि अनुकूलन आदेश, १९५० अन्वये मूळ मजकूराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
४. भारतीय विधि अनुकूलन परिषद आदेश अन्वये हा मजकूर वगळण्यात आला.
५. सन १९८४ चा महाराष्ट्र अधिनियम क्रमांक २७, कलम २ (क) च्या तरतुदीनुसार मूळ मजकूराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
६. सन १९७६ चा अधिनियम क्रमांक १२ अन्वये हा मजकूर रद्द करण्यात आला.
७. सन १९८३ चा महाराष्ट्र अधिनियम क्रमांक १०, कलम २(अ) अन्वये मूळ मजकूराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
८. सन १९५८ चा मुंबई अधिनियम क्रमांक ९४ याच्या कलम ४ अन्वये हा मजकूर वगळण्यात आला.
९. सन १९०० चा मुंबई अधिनियम क्रमांक १ कलम २ अन्वये हा मजकूर समाविष्ट करण्यात आला.
१०. सन १९७६ चा अधिनियम क्रमांक १२ अन्वये हा मजकूर वगळण्यात करण्यात आला.
११. सन १९९९ चा महाराष्ट्र अधिनियम क्रमांक ३, कलम २ अन्वये मूळ मजकूराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
१२. सन १९९० चा अधिनियम क्रमांक ८ अन्वये हा मजकूर वगळण्यात आला.
१३. सन १९५८ चा मुंबई अधिनियम क्रमांक ९४, कलम ५ अन्वये मूळ कलमाऐवजी हे कलम दाखल करण्यात आले.

१९. <sup>१</sup>[राज्य] शासनास] <sup>२</sup>[राजपत्रांत] प्रसिध्द केलेल्या अधिसूचनेद्वारे, जिल्ह्याच्या एखाद्या विशिष्ट भागातील जिल्हा न्यायाधिकाचे सर्व किंवा त्यांपैकी कोणतेही अधिकार <sup>३</sup>[अपर जिल्हा] न्यायाधिकाकडे सोपविण्याचा अधिकार आहे ; आणि त्यास, तशाच अधिसूचनेद्वारे, वेळोवेळी, अशा भागांच्या मर्यादा ठरविण्याचा आणि त्यांत फेरफार करण्याचा अधिकार आहे.

<sup>३</sup>[अपर जिल्हा न्यायाधिका-कडे]  
जिल्हा न्यायाधिकाचे अधिकार सोपवून देण्याचा अधिकार.

अशा रीतीने <sup>४</sup>[अपर जिल्हा न्यायाधिकास] देण्यात आलेल्या क्षेत्राधिकारांतून जिल्हा न्यायाधिकाचे उक्त हद्दीतील क्षेत्राधिकार त्याच मर्यादेपर्यंत वगळण्यात येतील.

अशा रीतीने अधिकार दिलेल्या <sup>५</sup>[अपर जिल्हा न्यायाधिकास] त्याच्या क्षेत्राधिकाराच्या स्थानिक हद्दीत <sup>१</sup>[राज्य] शासन] ठरवील अशा ठिकाणी सामान्यतः आपले न्यायालय भरविले पाहिजे, तसेच त्यास, उच्च न्यायालयाची पूर्व मंजूरी घेऊन, अशा हद्दीतील इतर कोणत्याही ठिकाणी न्यायालय भरविण्याचा अधिकार आहे.

२०. प्रत्येक जिल्ह्यात, <sup>६</sup>[अपर जिल्हा न्यायाधिकास] जो <sup>७</sup>[अपर जिल्हा न्यायाधिका] आहे त्याने जिल्हा न्यायाधिकाचा शिक्का वापरता पाहिजे.

<sup>६</sup>[अपर जिल्हा न्यायाधिकास]  
जिल्हा न्यायाधिकाचा शिक्का वापरणे.

### प्रकरण-सहा

#### <sup>८</sup>[दिवाणी न्यायाधीश]

२१. प्रत्येक जिल्ह्यात, जिल्हा न्यायालयास <sup>१</sup>[राज्य] शासन] वेळोवेळी निदेश देईल इतकी <sup>२</sup>[\* \* \*] दुय्यम दिवाणी न्यायालये असतील :

दुय्यम दिवाणी न्यायालयांची संख्या.

<sup>३</sup>[परंतु, <sup>४</sup>[राज्य] शासनाने] विशेष कारणास्तव कोणत्याही वेळी असे दुय्यम न्यायालय तात्पुरते बंद ठेवणे हे विधिसंमत असेल.]

२२. अशा अधीन न्यायालयाचे न्यायाधीश यांची नेमणूक <sup>५</sup>[राज्य] शासनाने] केली पाहिजे आणि त्यांना <sup>६</sup>[दिवाणी न्यायाधीश] असे म्हटले पाहिजे.

<sup>६</sup>[दिवाणी न्यायाधिकांची नेमणूक]

१० \* \* \* \* \*

१. भारतीय विधि अनुकूलन परिषद आदेश अन्वये मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
२. विधि अनुकूलन आदेश, १९५० अन्वये मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
३. भारतीय विधि अनुकूलन परिषद आदेश अन्वये मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
४. सन १९८४ चा महाराष्ट्र अधिनियम, क्रमांक २७, कलम २ (अ) अन्वये मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
५. सन १९८४ चा महाराष्ट्र अधिनियम, क्रमांक २७, कलम २ (क) द्वारे मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
६. मुंबई दिवाणी न्यायालये (सुधारणा) अधिनियम, १९४५ (१९४५ चा मुंबई १०) कलम २ तसेच सन १९४७ चा मुंबई अधिनियम, क्रमांक ४८, कलम ३ अन्वये मजकूर त्याच्या व्याकरणिक फेरफारातून हा दाखल करण्यात आला.
७. भारतीय विधि अनुकूलन परिषद आदेश अन्वये हा मजकूर वगळण्यात आला.
८. मुंबई दिवाणी न्यायालये (सुधारणा) अधिनियम, १९०० (१९०० चा मुंबई १) कलम ३ द्वारे हे परंतुक समाविष्ट करण्यात आले.
९. मुंबई दिवाणी न्यायालये (सुधारणा) अधिनियम, १९४५ (१९४५ चा मुंबई १०) कलम ३ द्वारे तसेच सन १९४७ चा मुंबई अधिनियम, क्रमांक ४८, कलम ३ द्वारे मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
१०. भारतीय विधि अनुकूलन परिषद आदेश, द्वारे हा मजकूर वगळण्यात आला.

\*[दिवाणी  
न्यायाधीशांच्या]  
क्षेत्राधिकाराच्या  
स्थानिक हद्दी  
ठरविण्याचा  
अधिकार.

१[२२. (क) १[राज्य] शासनास] राजपत्रात प्रसिध्द केलेल्या अधिसूचनेद्वारे, १[दिवाणी न्यायाधीशांच्या] सामान्य क्षेत्राधिकाराच्या स्थानिक हद्दी ठरविण्याचा, आणि तशाच अधिसूचनेद्वारे, अशा हद्दीत फेरफार करण्याचा अधिकार आहे.

दुय्यम  
न्यायालयांची  
जागा.

२३. १[दिवाणी न्यायाधीशानी] १[राज्य] शासन] वेळोवेळी ठरवील अशा त्यांच्या क्षेत्राधिकाराच्या स्थानिक हद्दीतील जागेत किंवा जागी आपली न्यायालये भरविली पाहिजेत :

१[परंतु,] १[राज्य] शासनाने] विशेष कारणास्तव १[दिवाणी न्यायाधीशाने] आपले न्यायालय आपल्या क्षेत्राधिकाराच्या स्थानिक हद्दीबाहेरील जागी भरवावे, असा आदेश देणे हे विधिसंमत असेल.]

जेव्हा अशा जागा एकापेक्षा अधिक असतील तेव्हा जिल्हा न्यायाधीशाने, उच्च न्यायालयाच्या नियंत्रणास अधीन राहून, अशा प्रत्येक जागी १[दिवाणी न्यायाधीश] ज्या दिवशी आपले न्यायालय भरवील ते दिवस ठरविले पाहिजेत. आणि १[दिवाणी न्यायाधीशाने] त्यांच्या क्षेत्राधिकाराच्या संपूर्ण स्थानिक हद्दीत असे दिवस योग्य रीतीने अधिसूचित केले पाहिजेत.

त्याच व्यक्तीस एकाहून जास्त अधीन न्यायालयांचा न्यायाधीश होण्याचा अधिकार आहे. १[आणि त्यास त्याच्या इतर कोणत्याही, न्यायालयांच्या मुख्य ठिकाणी, त्याच्या न्यायालयापैकी कोणत्याही न्यायालयांच्या दिवाणी कामकाजाची विल्हेवाट लावण्याचा अधिकार आहे]; आणि अशा बाबतीत, जिल्हा न्यायाधिशाने, उच्च न्यायालयाच्या नियंत्रणास अधीन राहून, १[दिवाणी न्यायाधीश] प्रत्येक न्यायालय ज्यावेळी भरवील त्या वेळेचे नियमन करण्यासाठी नियम विहित केले पाहिजेत.

संयुक्त  
१[दिवाणी  
न्यायाधिशानी  
नियुक्ती]

१[कोणत्याही अधीन न्यायालयाच्या न्यायाधिशस त्याच्या दफतरांतील दिवाणी कामकाजाची विल्हेवाट लावण्याच्या कामी त्यास मदत करण्यासाठी १[उच्च न्यायालयास, १[राज्याच्या] दुय्यम दिवाणी न्यायालयाने सेवेतील इसमापैकी] एक किंवा अधिक इसमांची संयुक्त १[दिवाणी न्यायाधिश] म्हणून नेमणूक करण्याचा अधिकार आहे.] किंवा जिल्हा न्यायाधिशस, उच्च न्यायालयाची आगाऊ मंजूरी घेऊन, त्या जिल्ह्यातील दुसऱ्या दुय्यम न्यायालयाच्या न्यायाधिशस अशा न्यायालयात पाठविण्याचा अधिकार आहे. अशा रीतीने दुसऱ्या १[दिवाणी न्यायाधीशास] त्याच्या न्यायालयात सहाय्य करण्यासाठी नेमलेल्या किंवा पाठविण्यात आलेल्या १[दिवाणी न्यायाधीशाने] त्याच्या आर्थिक क्षेत्राधिकाराच्या मर्यादेतील, अशा न्यायालयाच्या न्यायाधिशाने त्याजकडे सोपविले असेल अशा दिवाणी कामकाजाची जिल्हा न्यायाधीशाच्या नियंत्रणास अधीन राहून विल्हेवाट लावली पाहिजे. १[तसेच त्यास, उच्च न्यायालयाने ह्या बाबतीत जे सामान्य किंवा विशेष आदेश दिले असतील त्यास अधीन राहून, ज्या जागी त्यास पाठविले असेल त्या जागी, आपल्या न्यायालयाच्या दिवाणी कामकाजाची विल्हेवाट लावण्याचा अधिकार आहे.]

१. मुंबई दिवाणी न्यायालय अधिनियम, १८८० (१८८० चा ९) कलम २ द्वारे कलम २२ (क) समाविष्ट करण्यात आले.
२. भारतीय विधि अनुकूलन परिषद आदेश अन्वये हा मजकूर घेण्यात आला.
३. विधि अनुकूलन आदेश, १९५० द्वारे मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
४. मुंबई दिवाणी न्यायालये (सुधारणा) अधिनियम, १९४५ (१९४५ चा मुंबई १०) कलम ३ तसेच सन १९४९ चा मुंबई अधिनियम, क्रमांक ४८, कलम ३ द्वारे मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर त्याच्या व्याकरणिक फेरफारासह दाखल करण्यात आला.
५. मुंबई दिवाणी न्यायालये (सुधारणा) अधिनियम, १९०० (१९०० चा मुंबई ९) याच्या कलम ४ द्वारे हा मजकूर समाविष्ट करण्यात आला.
६. सन १९३० चा मुंबई ७ च्या कलम २ (१) द्वारे हा मजकूर समाविष्ट करण्यात आला.
७. सन १९०० चा मुंबई अधिनियम, क्रमांक ९, कलम ४ द्वारे मूळ परिच्छेदाऐवजी हे दोन परिच्छेद दाखल करण्यात आले.
८. भारतीय विधि अनुकूलन परिषद आदेश द्वारे मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
९. सन १९३० चा मुंबई अधिनियम, क्रमांक ७, कलम २ (२) द्वारे हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

या कलमाच्या प्रयोजनासाठी <sup>१</sup>[दिवाणी न्यायाधिशान्स] लागू असलेली या अधिनियमाची तरतूद ही संयुक्त <sup>१</sup>[दिवाणी न्यायाधिशान्स] लागू असतील आणि ते त्यांस नेहमीच लागू होते असे समजण्यात आले प्राहिजे, परंतु, अशा कोणत्याही संयुक्त <sup>१</sup>[दिवाणी न्यायाधिशान्स] दक्षिणेतील शेतकऱ्यांस सहाय्य देण्याबाबत अधिनियम, १८७९, कलम ४ अन्वये दाखल केलेल्या कोणत्याही दाव्याची सुनावणी करता येईल.]

२४. <sup>१</sup>[दिवाणी न्यायाधिशान्स] दोन वर्ग असतील.

<sup>१</sup>[दिवाणी न्यायाधिशान्स] वर्ग.

<sup>१</sup>[(वरिष्ठ श्रेणीच्या) दिवाणी न्यायाधीशाच्या] क्षेत्राधिकारांत सर्व प्रारंभिक दाव्यांच्या आणि दिवाणी स्वरूपाच्या कामकाजाचा समावेश होतो.

<sup>१</sup>[(वरिष्ठ श्रेणीच्या) दिवाणी न्यायाधिशान्स] क्षेत्राधिकार.

१. मुंबई दिवाणी न्यायालये (सुधारणा) अधिनियम, १९४५ (१९४५ चा मुंबई १०) याचे कलम ३ तसेच सन १९४७ चा मुंबई अधिनियम, क्रमांक ४८ याचे कलम ३ द्वारे मूळ मजकुराऐवजी त्याच्या व्याकरणिक मेरफारंसह हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
२. मुंबई दिवाणी न्यायालये (सुधारणा) अधिनियम, १९४५ (१९४५ चा मुंबई १०) याचे कलम ४ तसेच सन १९४७ चा मुंबई अधिनियम, क्रमांक ४८ याचे कलम ३ द्वारे मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
३. मुंबई दिवाणी न्यायालये (सुधारणा) अधिनियम, १९४५ (१९४५ चा मुंबई १०) याचे कलम ५ तसेच सन १९४७ चा मुंबई अधिनियम, क्रमांक ४८ याच्या कलम ३ अन्वये मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

(३) <sup>१</sup>[दिवाणी न्यायाधिकाऱ्याच्या] आदेशावर, फोट-कलम (२) अन्वये केलेल्या अपीलान्त जिल्हा न्यायाधिशाने दिलेल्या प्रत्येक आदेशावर, व्यवहार प्रक्रिया संहितेत असलेले जे नियम अपीलात दिलेल्या हुकुमनाम्यावर केलेल्या अपिलास लागू असतील त्या अन्वये उच्च न्यायालयाकडे अपील करता येईल.]

[दिवाणी न्यायाधिकाऱ्याच्या] २९. प्रत्येक <sup>१</sup>[दिवाणी न्यायाधिशाने]दीड इंच व्यासाचा आणि <sup>१</sup>[(अशोक स्तंभ शीषांकृती)]जसलेला शिक्का वापरला पाहिजे. त्यावर इंग्रजी भाषेत आणि त्या जिल्ह्याच्या मुख्य भाषेत पुढील मजकूर असेल:-  
शिक्का] . चा <sup>१</sup>[दिवाणी न्यायाधीश]

सरकार- ३०. व ३१. [पहिल्या वर्गाचे अधीन न्यायाधीश ; अनिर्णित कामकाज] ही कलमे सन १८७६ चा संबंधी अधिनियम १२ अन्वये रद्द करण्यात आली.  
वादे.

<sup>३</sup>[३२. (१) ज्या कोणत्याही दाव्यात <sup>१</sup>[बादशहा]किंवा <sup>१</sup>[शासनाचा] कोणताही अधिकारी आपल्या पदाच्या नात्याने पक्षकार आहे अशा कोणताही दावा <sup>१</sup>[(वरिष्ठ विभागाच्या) दिवाणी न्यायाधिकाऱ्याच्या] न्यायालयाव्यतिरिक्त इतर कोणत्याही अधीन न्यायालयाने किंवा लघुवाद न्यायालयाने स्वीकारता किंवा त्याची नोंदणी करता कामा नये.

(२) अशा वादीसंबंधीचे प्रत्येक प्रकरण <sup>१</sup>[(वरिष्ठ विभागाच्या) [ दिवाणी न्यायाधिकाऱ्याच्या ] न्यायालयाकडे १९०८ पाठविण्यात यावे आणि अशा प्रकारचा दावा फक्त <sup>१</sup>[(वरिष्ठ विभागाच्या) दिवाणी न्यायाधिकाऱ्याच्या] न्यायालयातच चा ५ दाखल करता येईल आणि दिवाणी प्रक्रिया संहिता, १९०८, कलम २४ च्या उपबंधास अधीन राहून, अशा <sup>१</sup>[दिवाणी न्यायाधिशाने]त्याची सुनावणी केली पाहिजे.

१. मुंबई दिवाणी न्यायालये (सुधारणा) अधिनियम, १९४५ (१९४५ चा मुंबई १०) कलम ४ तसेच सन १९४७ चा मुंबई ४८ कलम ३ याद्वारे मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर समाविष्ट करण्यात आला.
२. सन १९४९ मुंबई २२, कलम ४ अन्वये मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात येईल.
३. मुंबई दिवाणी न्यायालये (सुधारणा) अधिनियम, १९२६ (१९२६ चा मुंबई ६) याच्या कलम २ द्वारे मूळ कलम ३२ ऐवजी हे कलम समाविष्ट करण्यात आले.
४. भारतीय विधी अनुकूलन परिषद आदेश याद्वारे मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.
५. विधी अनुकूलन आदेश १९५० द्वारे मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात येईल.
६. मुंबई दिवाणी न्यायालये (सुधारणा) अधिनियम, १९४५ (१९४५ चा मुंबई १०) कलम ५ तसेच सन १९४७ चा अधिनियम क्र. ४८, कलम ३ द्वारे मूळ मजकुराऐवजी नवीन मजकूर दाखल करण्यात येईल.

(३) हया कलमातील कोणताही मजकूर सरकारी रेल्वे प्रशासन प्राधिकार्यांच्या विरुद्ध केलेल्या दाव्यास किंवा 'शासनाचा' अधिकारी हा :-

(अ) स्थानिक प्राधिकारी मंडळाचा सभासद आहे म्हणून ; किंवा तो,

(ब) (१) व्यवहार प्रक्रिया संहिता, १९०८, आदेश २४ अन्वये, नियम (४) अन्वये ;

(२) भारताचा वेड लागलेल्या इसमांबाबत अधिनियम, १९१२, कलम ६९ किंवा ७१ या अन्वये ;

(३) पालक व प्रतिपालक अधिनियम, १८९०, कलम ७, १८ किंवा ४२ अन्वये ;

(४) अहमदाबादच्या तालुकदारांबाबत अधिनियम, १८६२, कलम १ किंवा १७ अन्वये ;

(५) मुंबई प्रतिपालक अधिकरण अधिनियम, १९०५, कलम ३, १९ (१), १९ (२), २०, २२ (१) किंवा ४१ (१) अन्वये नेमणुकीच्या, अधिकार सौंपवून देण्याच्या, जाहीर करण्याच्या किंवा अधिकार चालविण्याच्या परत्ये एखाद्या खाजगी इसमाचा किंवा संपत्तीचा संग्रहाव्यक्ष, संरक्षक, व्यवस्थापक किंवा प्रतिनिधी, म्हणून अशा दाव्यात पक्षकार आहे या कारणावरूनच कोणत्याही दाव्यास ह्या कलमांतील कोणताही मजकूर लागू अज्ञात नाही.]

### काढून टाकणे किंवा तात्पुरते दूर करणे

३३. [अभिकथित गैरवर्तणुकीची चौकशी करण्यासाठी नेमलेले चौकशी मंडल] हे कलम, भारतीय विधि अनुकूलन परिषद आदेश या अन्वये निरसित करण्यात आले.

३४. [उच्च न्यायालयाने, व जिल्हा न्यायाधीशाने अधीन न्यायाधिकांश तात्पुरते कामावरून दूर करण्यासंबंधी व बडतर्फ सरकारच्या अधिकाराचा वचाव] ; हे कलम भारतीय विधि अनुकूलन परिषद आदेश या अन्वये निरसित करण्यात आले.

### प्रकरण सात

#### तात्पुरत्या रिक्त जागा

३५. जिल्हा न्यायाधीश मरण पावल्यास किंवा रजेवर गेल्यामुळे तो त्याच्या जिल्ह्यामध्ये अनुपस्थित राहिल्यास किंवा तो काम करण्यास असमर्थ झाल्यास, \* [जिल्ह्याच्या सहन्यायाधीशांपैकी] प्रथम दर्जाचा असलेला सहन्यायाधीश, किंवा कोणत्याही सहन्यायाधीशाच्या अनुपस्थितीत, जिल्ह्याच्या \* [अपर जिल्हा न्यायाधीशांपैकी] प्रथम दर्जाचा असलेला \* [अपर जिल्हा न्यायाधीश] किंवा कोणत्याही \* [जिल्हा सहन्यायाधीशाच्या] आणि \* [अपर जिल्हा न्यायाधीशाच्या] अनुपस्थितीत, जिल्ह्याच्या दिवाणी न्यायाधीशांपैकी प्रथम दर्जाचा असलेला दिवाणी न्यायाधीश, त्याच्या नेहमीच्या अधिकारितेमध्ये व्यत्यय न येऊ देता, जिल्हा न्यायालयाचा कार्यभार ग्रहण करील आणि अशा प्रकारे कार्यभार धारण केलेला असताना तो, वाद आणि अपिले दाखल करून घेणे, वाद प्रतिवाद ऐकून घेणे अंमलबजावणी विषयक आदेशिका व रिट व तत्सम गोष्टी मिळवणे यां संबंधातील जिल्हा न्यायाधीशाची कर्तव्ये पार पाडील व जिल्हा न्यायाधीशांपुढे दाखल करण्यात आलेले किंवा दाखल करण्यात येतील किंवा त्याच्यापुढे प्रलंबित असतील असे कोणतेही तातडीचे वाद, अपिले आणि इतर कार्यवाही (कोणत्याही विशेष अधिनियमाखालील कोणतेही अर्ज किंवा निर्देश यांसह) देखील निकालात काढील.

जिल्हा न्यायाधिकाचे पद तात्पुरते रिक्त होणे.

१. विधि अनुकूलन आदेश १९५० द्वारे मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

२. सन १९७७ चा महाराष्ट्र अधिनियम, क्र. ४६, कलम १७ द्वारे मूळ कलमाऐवजी कलम ३५ दाखल करण्यात आला.

३. सन १९८४ चा महा. अधि. क्र. २७, कलम ३(अ) द्वारे मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

४. वरील अधिनियमाच्या कलम ३(ब) द्वारे मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

अशी कर्तव्ये पार पाडणारा आणि अशा शक्तीचा वापर करणारा न्यायाधीश हा जिल्ह्याचा प्रभारी पदनिर्देशित <sup>१</sup>[जिहा सहन्यायाधीश] <sup>२</sup>[अपर जिल्हा न्यायाधीश] किंवा यथास्थिति दिवाणी न्यायाधीश असेल आणि तो, जिल्हा न्यायाधीशाच्या पदावर यथोचितरीत्या नेमणूक केलेला अधिकारी त्या पदावर परत रुजू होईपर्यंत किंवा तो त्या पदाचा कार्यभार ग्रहण करीपर्यंत असा कार्यभार धारण करण्याचे चालू ठेवेल”.

जिल्हा न्यायाधिकाऱ्यांचे सौमविण. ३६. कोणत्याही जिल्हा न्यायाधिकाऱ्यास <sup>१</sup>[कोणताही <sup>२</sup>[जिहा सहन्यायाधीश] उपलब्ध नसेल अशा बाबतीत] तो सदर स्टेशन सोडून कामकाजाकरिता जिल्ह्यातील कोणत्याही जागी जाईल तेव्हा कलम ३५ मध्ये निकडीची म्हणून ज्या कोणत्याही कामांची गणना केली असेल ती कामे करण्याचा अधिकार सदर स्टेशनातील कोणत्याही <sup>३</sup>[अपर जिल्हा न्यायाधीशाकडे] किंवा त्याच्या गैरहजेरीत <sup>४</sup>[दिवाणी न्यायाधीशांकडे] सोपवून देण्याचा अधिकार आहे ; आणि अशा अधिकाऱ्यांस यथास्थिती अशा सदर स्टेशनातील <sup>५</sup>[अपर जिल्हा न्यायाधीश] किंवा <sup>६</sup>[दिवाणी न्यायाधीश] म्हणून नामोदिष्ट करण्यात आले पाहिजे.

दुय्यम न्यायाधिकाऱ्यांचे तात्पुरते रिक्त झालेले पद. ३७. कोणताही <sup>१</sup>[दिवाणी न्यायाधीश] मरण पावेल, किंवा त्यास तात्पुरते कामावरून दूर करण्यात आले किंवा तो तात्पुरता गैरहजर असेल तेव्हा, जिल्हा न्यायाधिकाऱ्यास त्याच जिल्ह्यांतील कोणत्याही अधीन न्यायालयाच्या न्यायाधिशाला रिक्त झालेल्या दुय्यम न्यायालयाच्या न्यायाधिकाऱ्याची कामे अशा न्यायालयाच्या किंवा त्याच्या स्वतःच्या न्यायालयांच्या जागी करण्याचे अधिकार देता येतील. परंतु अशा प्रत्येक बाबतीत दोन्ही न्यायालयाची नोंदणी पुस्तके आणि दफ्तरे वेगवेगळी ठेवण्यात आली पाहिजे.

### प्रकरण-आठ

#### प्रशासी अधिकारी

३८. [प्रशासी अधिकाऱ्यांची नेमणूक वगैरे] हे कलम भारतीय विधि अनुकुलन परिषद आदेश या अन्वये निरसित करण्यात आले.

प्रशासी अधिकाऱ्यांची कर्तव्ये. ३९. <sup>१</sup>[[दिवाणी न्यायालयांच्या प्रशासी अधिकाऱ्यांची] कर्तव्ये.] उच्च न्यायालय वेळोवेळी विहित करील अशा नियमांन्वये नियमित करण्यात आली पाहिजेत.

न्यायालयांचे कारकून नेमण्याचे अधिकार. ४०. <sup>१</sup>[या अधिनियमान्वये कोणत्याही दिवाणी न्यायालयास न्याय कारकून नेमण्याचा अधिकार आहे.] अशा कारकुनास उच्च न्यायालय वेळोवेळी विहित करील अशी करावयाची कामे धरून त्यास फिर्यादी स्वीकारण्याचा व त्यांची नोंदणी करण्याचा अधिकार आहे आणि ज्या फिर्यादी स्वीकारण्यात न याव्यात असे त्यास वाटत असेल त्या सर्व फिर्यादींचा त्याने न्यायालयाच्या न्यायाधिकाऱ्याकडे उल्लेख केला पाहिजे ; तसेच त्यात आदेशिकावर सही करण्याचा आणि कागदपत्रांच्या अधिकृत प्रतीवर सही करण्याचा अधिकार आहे.

४०-अ. [न्यायालयाचे कारकून किंवा प्रशासी अधिकारी यांची बदली करण्याचा अधिकार] हे कलम भारतीय विधि अनुकुलन परिषद आदेश या अन्वये माळण्यात आले.

१. सन १९८४ चा महाराष्ट्र अधिनियम क्रमांक २७, कलम २(ब) द्वारे मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

२. वरील अधिनियमाचा कलम २(अ) द्वारे मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

३. सन १९७७ चा महाराष्ट्र अधिनियम क्रमांक ४६, कलम १८ द्वारे हा मजकूर समाविष्ट करण्यात आला.

४. मुंबई दिवाणी न्यायालये (सुधारणा) अधिनियम, १९४५ (१९४५ चा पुर्तूई १०) याचे कलम ४ तसेच सन १९४५ चा महाराष्ट्र अधिनियम क्रमांक ४८, कलम ३ मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

\* सन १९८४ चा महाराष्ट्र अधिनियम क्रमांक २७, कलम २(क) च्या तरतुदीनुसार मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

५. भारतीय विधि अनुकुलन परिषद आदेशाद्वारे मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

६. वरील प्रमाणे मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

## प्रकरण-नऊ

## संकीर्ण

४१. उच्च न्यायालय वेळोवेळी विहित करील अशा नियमानुसार प्रत्येक दिवाणी न्यायालयाचे कामकाज ठेवले पाहिजे व त्याची नोंद केली पाहिजे. कागदपत्रांच्या नकला कोणत्या नियमाअन्वये द्यावा ते नियम ठरविण्याचाही उच्च न्यायालयास अधिकार आहे.

कामकाज ठेवण्यासंबंधी नियम

१[४१-अ. (१) उच्च न्यायालयास पुढील गोष्टीसाठी वेळोवेळी, या अधिनियमास किंवा त्या त्या वेळी अंमलात असलेल्या इतर कोणत्याही अधिनियमास सुसंगत असे नियम करण्याचा अधिकार आहे :—

लायसन दिलेले विनंती-अर्ज लिहून देणे.

(अ) त्यास अधिन असणाऱ्या न्यायालयात ज्या इसमास विनंती अर्ज लिहून देणारे म्हणून परवानगी मिळेल ते इसम ठरविणे ;

(ब) अशा इसमास लायसन देणे, त्याच्या कामकाजाची पध्दत ठरविणे आणि त्यांनी घ्यावयाची फी याबाबत नियमन करणे ; आणि

(क) अशा रीतीने तयार करण्यात आलेल्या नियमांचे उल्लंघन केले असता त्याबद्दल पत्रास रुपयाहून अधिक नाही इतक्या दंडाची. शिक्षा ठरविणे, आणि नियमांचे असे उल्लंघन केलेल्या बाबींची ज्या प्राधिकार्यास चौकशी करता येईल आणि शास्ती लादता येईल तो प्राधिकारी ठरविणे.

(२) पोट-कलम (१), खंड (क) अन्वये बसविलेला प्रत्येक द्रव्यदंड हा, फौजदारी न्यायाधिशाने त्याचे सामान्य क्षेत्राधिकार चालवून बसविलेल्या दंडाप्रमाणे वसूल करता येईल.]

४२. उच्च न्यायालयाने १[१[राज्य] शासनाची] मंजूरी घेऊन, या अधिनियमाअन्वये रचना केलेल्या न्यायालयाने किंवा अशा न्यायालयाच्या कोणत्याही अधिकार्याने कोणत्याही आदेशिकेबद्दल घ्यावयाची फी विहित केली पाहिजे आणि तिचे नियमन केले पाहिजे.

आदेशिकेची फी.

अशा रीतीने विहित केलेल्या फीचे कोष्टक १[राजपत्रात] प्रसिध्द केले पाहिजे.

४३. रविवार \* \* \* \* \* तसेच प्रत्येक किंवा हरएक जिल्ह्यासाठी जे अन्य उच्च न्यायालय मंजूर करील ते खेरीजकरून इतर दिवशी न्यायालयाची जिल्हा न्यायालये आणि अधीन न्यायालये भरविण्यात आली पाहिजेत.

बैठक.

उच्च न्यायालयास त्याच्या नियंत्रणाखालील दिवाणी न्यायालयास प्रत्येक वर्षी एकंदर सहा आठवड्यापेक्षा सुट्या जास्त नाही इतक्या मुदतीकरिता कामकाज बंद ठेवण्यास परवानगी देण्याचा अधिकार आहे.

१. मुंबई दिवाणी न्यायालये (सुधारणा) अधिनियम, १९०० (१९०० चा मुंबई १) कलम ९ द्वारे कलम ४१ अ दाखल करण्यात आले.

२. भारतीय विधि अनुकूलन परिषद आदेश याद्वारे मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

३. विधि अनुकूलन आदेश १९५० द्वारे मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

४. भारतीय विधि अनुकूलन परिषद आदेश याद्वारे मूळ मजकुराऐवजी हा मजकूर दाखल करण्यात आला.

५. सन १९८३ चा महाराष्ट्र अधिनियम क्रमांक १०. कलम ५ द्वारे हा मजकूर दगळण्यात आला.